ISSN : 2582-6360

विश्व दीप दिव्य संदेश

मासिक शोध पत्रिका

वर्ष 29 | अंक 09 विक्रम संवत् 2082 सितम्बर2025 | पृष्ठ 34

संरक्षक : विश्वगुरु महामण्डलेश्वर परमहंस श्री स्वामी महेश्वरानन्दपुरीजी

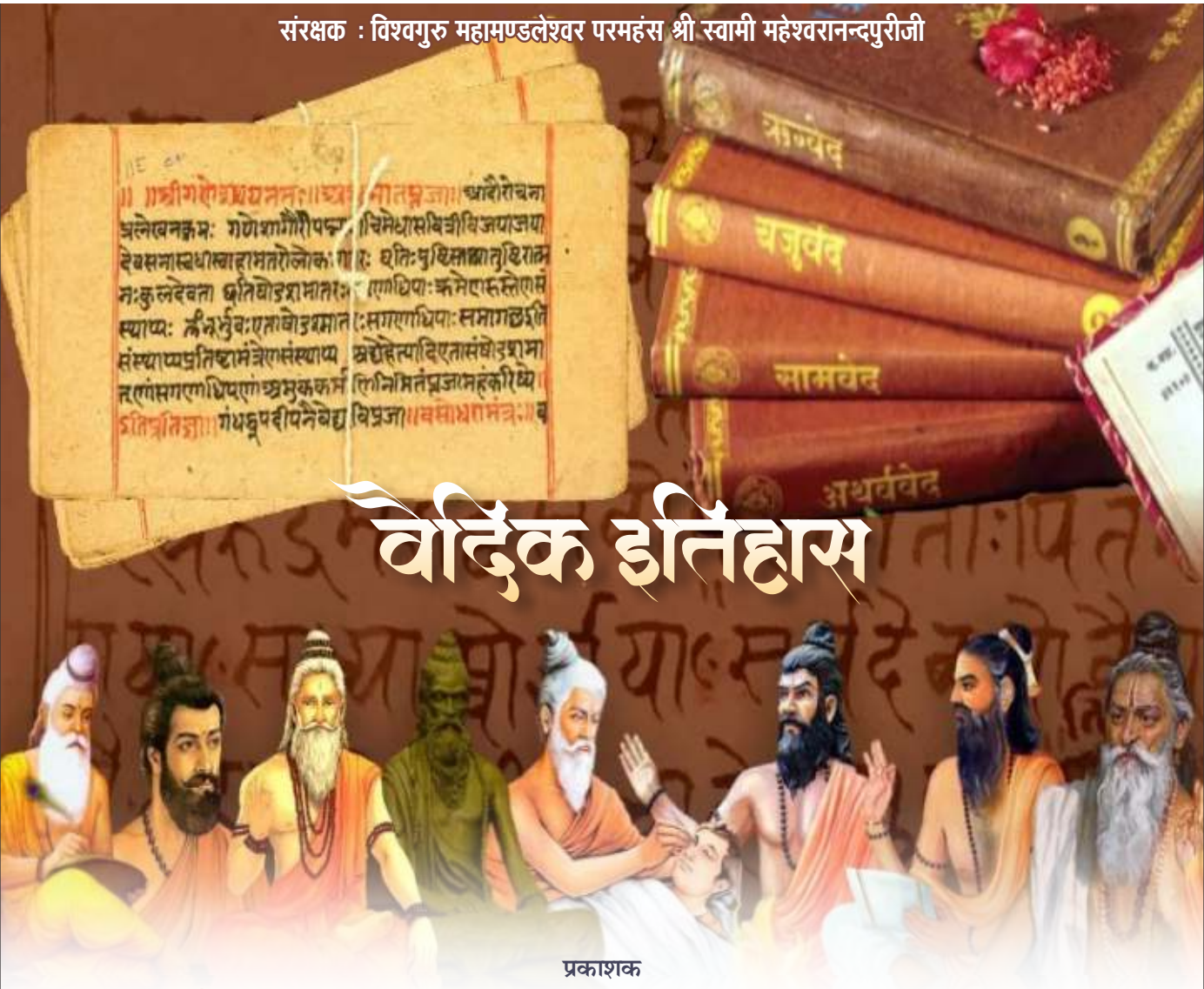

वैदिक इतिहास

प्रकाशक

विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान

(राजस्थान संस्कृत अकादमी से सम्बद्ध)

कीर्ति नगर, श्याम नगर, सोढाला, जयपुर

ISSN : 2582-6360

विश्व दीप दिव्य संदेश

मासिक शोध पत्रिका

वर्ष 29 | अंक 09 विक्रम संवत् 2082 सितम्बर 2025 | पृष्ठ 34

परामर्शदाता
प्रो. बनवारीलाल गौड़
प्रो. कैलाश चतुर्वेदी
डॉ. शीला डागा
प्रो. (डॉ.) गणेशीलाल सुथार

प्रधान सम्पादक
श्री सोहन लाल गर्ग
श्री एम.एल. गर्ग

सम्पादक
डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा

सह-सम्पादक
डॉ. रघुवीर प्रसाद शर्मा
तिबोर कोकेनी
श्रीमती अन्या वुकादिन

- प्रमुख संरक्षक -
परम महासिद्ध अवतार श्री अलखपुरी जी
परम योगेश्वर स्वामी श्री देवपुरी जी

- प्रेरणास्त्रोत -
भगवान् श्री दीपनारायण महाप्रभुजी

- संस्थापक -
परमहंस स्वामी श्री माधवानन्द जी

- संरक्षक -
विश्वगुरु महामण्डलेश्वर परमहंस
श्री स्वामी महेश्वरानन्दपुरीजी

- प्रबन्ध सम्पादक -
महामण्डलेश्वर स्वामी ज्ञानेश्वर पुरी

प्रकाशक

विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान

(राजस्थान संस्कृत अकादमी से सम्बद्ध)

कीर्ति नगर, श्याम नगर, सोढाला, जयपुर

Website : vgda.in | **Youtube :** www.youtube.com/c/vishwagurudeepashram | **E-mail :** jaipur@yogaindailylife.org

अनुक्रमणिका

1.	सम्पादकीय	डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा	3
2.	YOGA SUTRAS OF PATANJALI	Swami Maheshwaranandapuri	4
3.	हिन्दी साहित्य की पाण्डुलिपियाँ: पारम्परिक धरोहर एवं आधुनिक विमर्श	डॉ. वीणा छंगाणी	9
4..	पुराण पाण्डुलिपि : परंपरा और आधुनिकता का संगम	डॉ. स्वाति शर्मा	14
5.	पांडुलिपि और भूगोल: इतिहास, संस्कृति एवं स्थान का दर्पण	डॉ. शेफाली भागोतिया	17
6.	"आधुनिक प्रबंधन सिद्धांतों में वैदिक विरासत और दर्शन का प्रासंगिकता एवं अनुप्रयोग"	डॉ. गरिमा मिश्रा	21
7.	पांडुलिपि कला में नारी पात्रों का चित्रण और उनकी सांस्कृतिक भूमिका	डॉ. वंदना गजराज	25
4.	राष्ट्रोपनिषत्	स्व. डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर	31

विश्वदीप दिव्य संदेश पत्रिका का वार्षिक सदस्यता शुल्क **800/- रूपये**

खाता संख्या : 5013053111

IFS Code : KKBK0003541

मुद्रण : **कन्ट्रोल पी**, जयपुर - मो. : 9549666600

सम्पादकीय

विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित मासिक शोधपत्रिका का वर्ष 2025 का नवम् अंक आपके करकमलों में अर्पित करते हुए अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा है। भारतीय धर्म-संस्कृति के शोधलेखों का यह संग्रह विद्वानों द्वारा सराहा जा रहा है। यह अंक नव संवत्सर विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। विद्वानों द्वारा नियमित भेजे जा रहे शोधलेख हमारा मनोबल बढ़ा रहे हैं व पत्रिका के महत्त्व को भी आलोकित कर रहे हैं। पूर्व अंकों में सभी उच्चस्तरीय विद्वानों के लेख प्रकाशित हुए हैं।

इसमें सर्वप्रथम महामण्डलेश्वर स्वामी महेश्वरानन्दपुरीजी द्वारा लिखित YOGA SUTRAS OF PATANJALI शोध लेख में पातंजलयोगसूत्र के प्रतिपाद्य की आधुनिक सन्दर्भ में उपयोगिता दर्शायी गयी है। डॉ. वीणा छंगाणी द्वारा लिखित **हिन्दी साहित्य की पाण्डुलिपियाँ: पारम्परिक धरोहर एवं आधुनिक- विमर्श** लेख में स्पष्ट किया है कि हिन्दी साहित्य की समृद्धि को जानने के लिए पाण्डुलिपि के इतिहास व परम्परा को जानना आवश्यक है। डॉ. स्वाति शर्मा द्वारा लिखित **पुराण पाण्डुलिपि:परम्परा और आधुनिकता का संगम "** लेख में पाण्डुलिपियों के माध्यम से प्राचीनता को आधुनिकता से जोड़ते हुए पुराण पाण्डुलिपियों की उपयोगिता को बताया है। डॉ. शेफाली भागोतिया द्वारा लिखित **" पांण्डुलिपि और भूगोल : इतिहास, संस्कृति एवं स्थान का दर्पण"**लेख में पाण्डुलिपि शोध कार्य में आने वाली समस्यायों व जटिलताओं के बारे में बताया है। डॉ. गरिमा मिश्रा द्वारा लिखित **"आधुनिक प्रबन्धन सिद्धान्तों में वैदिक विरासत और दर्शन का प्रासंगिकता एवं अनुप्रयोग"** लेख में वैदिक दर्शन की प्रमुख अवधारणाओं एवं आधुनिक समय में वैदिक सिद्धान्तों की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला है। डॉ. वंदना गजराज द्वारा लिखित **"पांण्डुलिपि कला में नारी पात्रों का चित्रण और उनकी सांस्कृतिक भूमिका** लेख में पाण्डुलिपियों में नारी पात्रों के चित्रण, शक्ति, भक्ति एवं उनकी सामाजिक, सांस्कृतिक भूमिका का विश्लेषण किया है।

अन्त में स्व. डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर के **'राष्ट्रोपनिषत्'** के कतिपय पद्य प्रकाशित किये गये हैं, जो गुरुशिष्य परम्परा के गौरव को प्रदर्शित करने के साथ साथ आत्मचिन्तन की प्रेरणा प्रदान करने वाले हैं।

आशा है, सुधी पाठक इन्हें रुचिपूर्वक हृदयंगम करने में अपना उत्साह पूर्ववत् बनाये रखेंगे।

शुभकामनाओं सहित....

-डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा

YOGA SUTRAS OF PATANJALI

A Guide to Self-knowledge

Mahamandleshwar Paramhans
Swami Maheshwaranandapuri

विभूति पादः
VIBHŪTI-PĀDAḤ

बलेषुहस्तिबलादीनि ॥ २५॥

25. baleṣuhasti-balādīni

bala – strength, power
hasti – elephant
balādīni – strength and other

By *samyama*on the power of an elephant, one attains its strength.

If a yogi concentrates on an elephant, they obtain its strength. If they concentrate on an eagle, they acquire its sharp vision and marksmanship. In this way, the Yogi can acquire any skill by concentration.

I have myself seen a yogi pull an aeroplane by a chain which he held between his teeth. I also knew a sadhu who could stop a locomotive from moving away by putting his hands against it. How is such a thing possible? Physical strength alone is not enough for that. Man's strength lies in mental strength and concentration. Physical strength is limited, mental strength is unlimited. By concentration, physical power can be increased infinitely. *Siddhis*, however, are not to be used to demonstrate miraculous things. There are more difficult things in life than stopping a locomotive, namely, controlling one's emotions.

प्रवृत्त्यालोकन्यासात्सूक्ष्मव्यवहितविप्रकृष्टज्ञानम् ॥ २६ ॥

26. pravṛttyāloka-nyāsāt-sūkṣma-vyavahita-viprakṛṣṭa-jñānam

pravṛitti – the progression
āloka – to behold, sight
nyāsa – the setting down
sūkṣma – fine, subtle
vyavahita – that which is hidden
viprakṛṣṭa – that which is distant
jñāna – knowledge

***Samyama*on the inner perception leads to the realisation of the subtle, hidden and distant.**

There are three things that cannot be perceived by the physical senses:

1. subtle elements (*tattvas*),
2. hidden things (e.g., what is under the earth or in a other room),
3. distant things.

For a realised Yogi matter is no obstacle. They can see through it everywhere by inner perception and see things which are hidden or distant or are in the astral planes quite clearly.

Those who practice *Kriyā-yoga* with concentrationcan realise this power more easily. *Trātaka*(candle meditation) is also a very good exercise to develop concentration (see "Yoga in Daily Life – The System", chapter *Hatha Yoga Kriyas*).

The next three *sūtras*describe how a yogi can attain extraordinary knowledge of the universe through their concentrated power of concentration.

भुवनज्ञानभ सूर्ये सभयमात् ॥ २७ ॥

27. bhuvana-jñānaṃsūryesaṃyamāt.

bhuvana – world
sūrya – sun
jñāna – knowledge
saṃyamāt = saṃyama – deep contemplation, meditation

***Samyama*on the sun gives knowledge of the cosmos.**

चन्द्रेताराव्यूहज्ञानम् ॥ २८ ॥

28. candretārā-vyūha-jñānam

candra – moon
tāra – star
vyūha – arrangement, wholeness
jñāna – knowledge

***Samyama*on the moon gives knowledge of the order of the stars.**

ध्रुवेतद्गतिज्ञानम् ॥ २९ ॥

29. dhruve tad-gati-jñānam

dhruva – polar star
tad – to be, her
gati – movement
jñāna – knowledge

***Samyama*on the pole star gives knowledge about the course of the stars.**

The yogi's concentration is so far-reaching that,without leaving their seat, without binoculars and other aids,they can obtain information about the entire cosmos. The *rishis*of ancient times already possessed extraordinary knowledge about the universe. For example, the Vedas contain precise information about the solar system and the planets – although there were no telescopes, satellites or spaceships at that time. The *rishis*also developed an "atomic theory"without electron microscopes.

नाभिचक्रे कायव्यूहज्ञानम् ॥ ३० ॥

30. nābhi-cakrekāya-vyūha-jñānam

nābhi – navel
cakra = chakra, energy center
kāya – body
vyūha – arrangement, wholeness
jñāna – knowledge

***Samyama*on the navel center (*Manipūra Chakra*) gives knowledge about the body.**

Knowing something about the body, about the state of health, the cause of a disease, etc., can be achieved by concentrating on the *Manipūra Chakra* (navel centre). The navel is where many nerves meet, and where a particularly large amount of *prāna*gathers. The energy that supplies and nourishes the whole body radiates from the *Manipūra chakra*. Concentration on this *chakra* therefore imparts the knowledge of all bodily functions.

कण्ठकूपे क्षूत्पिपासानिवृत्तिः ॥ ३१ ॥

31. kaṇṭha-kūpekṣut-pipāsā-nivṛttiḥ

kaṇṭha – throat
kūpa – well, hole, cave kṣut
(kṣudh) – hunger
pipāsā – thirst
nivṛtti – stop

Through *samyama*on the throat centre (*Vishuddhi Chakra*),hunger and thirst pass away.

Certain yoga exercises that act on the *Vishuddhi Chakra* act against hunger pangs and increase the vital force in the body. These exercises are: *Bhastrika-Prānāyāma, MahāBandha*as well as *Ujjāyi-Prānāyāma,* and rebest performed in the open air.

By concentrating on the laryngeal center and the yoga techniques of *Ujjāyi-Prānāyāma, Khechari-Mudrā*and *JālandharBandha,* it is possible to collect and harness the "nectar" (*amrit*), a type of hormone produced in the *bindu chakra.* This revitalises and rejuvenates the body.

For a detailed description of the techniques, see the book "Yoga in Daily Life – The System". It is important that such advanced exercises are performed only after an appropriate period of preparation and under the guidance of a master.

कूर्मनाड्यांस्थैर्यम् ॥ ३२ ॥

32. kūrma-nāḍyāṃsthairyam

kūrma – turtle
nāḍya – energy channel, born from the river
sthairya – firmness, stability

***Samyama*on the *kūrma-nādi*gives stability.**

According to yoga anatomy, there are 72,000 *nādis* in the human body. They act as energy channels and information transmitters in the body. Each *nādi*has a Sanskrit name. Some of the most important *nādis*are *idā*, *pingalā, shushumnā, brahmānādi*and *vajra-nādi*. (About the *nādis*and their effect on the body, see the book "The Hidden Forces in Man").

*Kūrma*means turtle. The *kūrma-nādi*runs in the armpit and is directly connected to the *Vishuddhi Chakra* (throat center). It has a relaxing effect and helps to calm the mind in concentration and meditation.

A simple technique can help when one is nervous, andagainst restlessness, sadness, nervousness, and lack of concentration. It helps to activate the *kūrma-nādi*by briefly pressing both fists into the armpits.

Near the *kūrma-nādi there* are two *nādis*(*idā*and *pingalā*) connected to the left and right nostrils. One can take advantage of this fact when the nose is blocked:

– If the right nostril is misplaced, press with the right fist into the left armpit for a few minutes.

– If the left nostril is closed, it is helpful to apply pressure with the fist in the right armpit.

हिन्दी साहित्य की पाण्डुलिपियाँ: पारम्परिक धरोहर एवं आधुनिक विमर्श

डॉ. वीणा छंगाणी

प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य की समृद्धि को समझने के लिए उसकी प्राचीन पाण्डुलिपि परम्परा को जानना अत्यावश्यक है। पाण्डुलिपियाँ हमारी सांस्कृतिक एवं साहित्यिक स्मृति की अमूल्य निधि हैं, जिन्होंने काव्य, कथा, गद्य, धार्मिक व दार्शनिक ग्रंथों की रक्षा शताब्दियों तक की। हिन्दी में भोजपत्र, ताड़पत्र, चमड़े, कागज़ आदि पर विविध लिपि एवं भाषा में संकलित अप्रतिम ग्रंथों की परम्परा रही है। इसके माध्यम से समाज की साहित्यिक चेतना, वैचारिक प्रवृत्ति एवं भाषागत विकास का गंभीर अध्ययन सम्भव है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं परम्परा

प्राचीन भारत में ज्ञान का संप्रेषण श्रुति एवं स्मृति परम्परा से होता था। हस्तलिखित पाण्डुलिपियाँ आरम्भिक रूप में संस्कृत व पालि भाषाओं में बनाई गईं, किन्तु मध्यकाल में हिंदी क्षेत्र में भी सैकड़ों ग्रंथ लिखे गये। 11वीं–12वीं शताब्दी के आसपास क्षेत्रीय भाषाओं में ग्रंथ लेखन प्रारम्भ हुआ– ब्रज, अवधी, खड़ी बोली आदि में।

मठ-मन्दिर, पाठशाला व राजवंशीय पुस्तकालय प्रमुख केन्द्र थे, जहाँ ये पाण्डुलिपियाँ सुरक्षित रही हैं। लोककाव्य, वीरगाथा, भक्ति साहित्य के साथ-साथ तंत्र, आयुर्वेद व ज्योतिष संबंधी ग्रंथ भी हिंदी में लिखे गये। पाण्डुलिपियों में भिन्न-भिन्न लिपि जैसे– देवनागरी, महाजनी, कैथी, शारदा, गुरू मुखी आदि के प्रयोग से क्षेत्रीयता और बहुलता का परिलक्षण होता है।

विशिष्ट उदाहरण

रामचरितमानस की पाण्डुलिपियाँ

रामचरितमानस, तुलसीदास द्वारा 16वीं शताब्दी में रचित, हिंदी साहित्य की सबसे महत्वपूर्ण पत्र-पुष्पों में मानी जाती है। तुलसीघाट, वाराणसी के मंदिर में इसकी 1648 ई. की हस्तलिखित पाण्डुलिपि उपलब्ध है, जो देवनागरी एवं गुरू मुखी लिपि में लिखी गई है। विभिन्न संस्करणों में पाठभेद, छंद की विविधता और अद्वितीय काव्य शिल्प की झलक मिलती है। संपादन एवं आलोचना के लिए इसकी पाण्डुलिपियाँ आज शोध की महत्वपूर्ण आधार बनी हैं।

कबीर बीजक की पाण्डुलिपियाँ

कबीर की बीजक पाण्डुलिपि हिंदी साहित्य व कबीर मत का महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है। लगभग 17वीं शताब्दी के आसपास इसकी पाण्डुलिपियाँ लिखी गईं; जिनमें कैथी, देवनागरी, महाजनी लिपि का प्रयोग हुआ। साखी, सबद, रमैयनी संकलनों के पाठ-वैविध्य ने आलोचना एवं संपादन परम्परा को समृद्ध किया है। बीजक के पाठ–भेद कबीर वाणी के मौलिक स्वरूप की खोज में सहायक रहे हैं।

प्रेमाख्यान काव्य की पाण्डुलिपियाँ

मध्यकालीन हिंदी साहित्य में प्रेमाख्यान काव्य—जैसे मधुमालती, चंद्रावती, नल-दमयन्ती—की पाण्डुलिपियाँ सूफी परम्परा और देशज भावबोध का संगम हैं। देशभर के विश्वविद्यालयों व पुस्तकालयों में संरक्षित पांडुलिपियों में देसी व फारसी लिपि, लोक–विश्वास और विभिन्न जातीय अभिव्यक्ति के असंख्य उदाहरण मिलते हैं। इनमें सामाजिकता, प्रेम-संबंध एवं स्त्री-पुरुष संवेदना का सुन्दर चित्रण मिलता है।

साहित्यिक महत्त्व और पाठ-संपादन

हिन्दी पाण्डुलिपियाँ साहित्य के प्रामाणिक रूप की पुष्टि करती हैं। तुलसी, कबीर, सूरदास जैसे कवियों की रचनाओं में विभिन्न पाठभेदों के अध्ययन से उनकी समकालीनता, मौलिकता तथा सरंचना का ज्ञान होता है। क्षेत्रीय भाषागत विविधता, लोक सांस्कृतिक तत्व, सामाजिक–ऐतिहासिक संदर्भ, देवी–देवता, वीर वाणी और निर्गुण भक्ति की अवधारणा को पाण्डुलिपियों ने समृद्ध किया है।

आधुनिक आलोचना में पाठ-संपादन, डिजिटलीकरण, आलोचनात्मक संस्करण तैयार करना अति

आवश्यक हो गया है ताकि साहित्य के मौलिक एवं प्रामाणिक स्वरूप को स्थायी रूप से सुरक्षित किया जा सके। राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन, भारतीय शिक्षा शोध संस्थान, व विश्वविद्यालयीय केन्द्र इस ओर कार्यरत हैं[2][3].

संरक्षण की स्थिति एवं चुनौतियाँ

आज भी देश के दर्जनों पुस्तकालय, संग्रहालय, मठ-मन्दिरों, संस्थानों में हजारों अमूल्य हिंदी पाण्डुलिपियाँ सुरक्षित हैं। आधुनिक काल में पाण्डुलिपियों की भूमिका पुस्तक प्रकाशन, आलोचना, भाषानुवाद, सांस्कृतिक पुनरुत्थान में अहम् है। तकनीकी विकास के कारण डिजिटलीकरण संभव हुआ है, जिससे पाण्डुलिपियाँ वैश्विक स्तर पर सुगमता से पहुँचाई जा सकीं।

किन्तु अनेक चुनौतियाँ भी विद्यमान हैं :

- **संरक्षण की कमी:** नमी, कीट, उपेक्षा तथा वित्तीय संसाधनों का अभाव।
- **ज्ञान का अभाव:** नई पीढ़ी में हस्तलिखित साहित्य की महत्ता का बोध सीमित।
- **भाषा एवं लिपि की कठिनाई:** प्राचीन लिपि पढ़ने और अनुसंधान के लिए विशेषज्ञों की कमी।
- **आधुनिकीकरण-**अनुवाद, व्याख्या एवं सरल प्रस्तुति में अड़चन।

आधुनिक विमर्श एवं उपयोगिता

वर्तमान समय में हिंदी पाण्डुलिपियाँ न केवल साहित्यिक, बल्कि ऐतिहासिक, दार्शनिक और समाजशास्त्रीय शोध का सशक्त माध्यम हैं। अनेक शोध-परियोजनाएँ पाण्डुलिपियों पर आधारित हैं– इससे सांस्कृतिक स्मृति, ज्ञान-परंपरा और भाषाविकास की धारा समझी जा सकती है। विश्वविद्यालय, शोध संस्थान, मिशन एवं सरकारी अभियान इस दिशा में आगे हैं।

निष्कर्ष

हिन्दी साहित्य की पाण्डुलिपियाँ हमारी सांस्कृतिक विरासत का महत्वपूर्ण भाग हैं। वे अतीत की स्मृतियों को जीवित रखकर आधुनिक साहित्य, शोध, आलोचना, भाषा–विकास, सांस्कृतिक पुनरुत्थान का शृंगार करती हैं।

उनका संरक्षण, संपादन, डिजिटलीकरण व जनसामान्य के लिए सुलभ बनाना साहित्य–समाज की सामूहिक जिम्मेदारी है। यदि युवा शोधकर्ता इन्हें आधुनिक परिप्रेक्ष्य से देखें तो हिन्दी साहित्य की समृद्ध परंपरा, विविधता, गहराई का अनुभव अवश्य मिलेगा, जो भविष्य की दिशा तय कर सकता है

Sources

[1] मार्गदर्शिकाएँ: दक्षिण एशियाई अध्ययन: पांडुलिपि अध्ययन
https://translate.google.com/translate?u=https%3A%2F%2Fguides.library.upenn.edu%2Fc.php%3Fg%3D1006790%26p%3D7500027&hl=hi&sl=en&tl=hi&client=srp

[2] पांडुलिपि दिशानिर्देश https://hindi.hilarispublisher.com/manuscript-guidelines.html

[3] लेखकों के लिए गाइड - भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका
https://translate.google.com/translate?u=https%3A%2F%2Fshodhpatrika.co.in%2Fguide-for-authors%2F&hl=hi&sl=en&tl=hi&client=srp

[4] शोध पत्र आमंत्रण
https://www.hansrajcollege.ac.in/hCPanel/uploads/focus/shodhsudha_notice_november-07_11_2020_page-0001.pdf

[5] सं॰ प्रशा॰ हिंदी. सेल ई पत्रित्र 22-23/02 **दिनांक:** 25/04/2022
https://agwb.cag.gov.in/files/agae/circular_order/Hindi_Magazine_%E2%80%9C_VANDE-MATARAM%E2%80%9D.pdf

[6] हिंदी भाषा और साहित्य का इतिहास https://www.du.ac.in/uploads/new-web/04012023_Appendix-107.pdf

[7] पांडुलिपि जमा करें – एशियाई विचारक
https://translate.google.com/translate?u=https%3A%2F%2Ftheasianthinker.com%2Fsubmit-manuscript%2F&hl=hi&sl=en&tl=hi&client=srp

[8] शब्द ब्रहम - भारतीय भाषाओ की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध ...
https://www.shabdbraham.com/ShabdB/search.php?mode=Hindi

[9] राजभाषा भारती https://rajbhasha.gov.in/sites/default/files/rb168_1.pdf

[10] नाम https://bhu.ac.in/Content/FacultyCV/amitpandeyvns@bhu.ac.in.pdf

[11] Ramcharitmanas https://en.wikipedia.org/wiki/Ramcharitmanas

[12] Preface | The Bijak of Kabir - Oxford Academic
https://academic.oup.com/book/12866/chapter/163154533

[13] Kabir Bijak 4 | IndianManuscripts.com http://indianmanuscripts.com/kabir-bijak-4

[14] प्रेमाख्यानकार कवि जान और उनका कृतित्व- डाक्टर हरीश
https://sufinama.org/articles/sammelan-patrtika-articles-5

[15] हिंदी प्रेमाख्यानक काव्य | Hindi Premakhyanak Kavya
https://epustakalay.com/book/70326-hindi-premakhyan-kavya-by-dr-kamal-kulshreshtha/

पुराण पाण्डुलिपि : परंपरा और आधुनिकता का संगम

डॉ. स्वाति शर्मा
अंग्रेज़ी विभाग
विश्वविद्यालय: एपेक्स विश्वविद्यालय, जयपुर

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीन और समृद्ध संस्कृतियों में से एक है। इस संस्कृति का मूल आधार हमारे धार्मिक ग्रंथ, शास्त्र, एवं पाण्डुलिपियाँ हैं। इनमें पुराण पाण्डुलिपियाँ विशेष रूप से महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं क्योंकि ये न केवल धार्मिक और आध्यात्मिक ज्ञान का भंडार हैं, बल्कि समाज, राजनीति, अर्थव्यवस्था, कला, साहित्य और दर्शन के विविध आयामों को भी समेटे हुए हैं। प्राचीन काल में लिखित रूप में संरक्षित इन पाण्डुलिपियों का उद्देश्य केवल धार्मिक उपदेश देना नहीं था, बल्कि समाज को दिशा प्रदान करना और मानव जीवन के सभी पक्षों का संतुलित विकास सुनिश्चित करना भी था। आज जब आधुनिकता के युग में परंपराएँ बदल रही हैं, तब इन पाण्डुलिपियों की प्रासंगिकता और भी बढ़ जाती है। यह शोध पत्र पुराण पाण्डुलिपियों के ऐतिहासिक महत्व, संरचना, विषय-वस्तु, तथा उनके आधुनिक सन्दर्भों में उपयोगिता पर केंद्रित है।

1. पुराण और पाण्डुलिपि की परिभाषा

'पुराण' शब्द का अर्थ है — वह जो 'पुरातन' है और साथ ही 'नवीन' रूप में समाज के लिए उपयोगी बना रहे। वेदों के पश्चात भारतीय साहित्य का जो विशाल भंडार हमें प्राप्त होता है, उसमें पुराणों का विशेष स्थान है। पुराणों को 'पंचम वेद' भी कहा जाता है क्योंकि इनमें वेदों का सार सरल और कथात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है। पाण्डुलिपि वह माध्यम है जिसके द्वारा यह ज्ञान पीढ़ी दर पीढ़ी स्थानांतरित हुआ। ये ताड़पत्र, भोजपत्र, या कपड़े पर लिखी हुई प्राचीन लिपियाँ हैं, जिनमें स्याही या प्राकृतिक रंगों से श्लोक अंकित किए जाते थे।

2. ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

भारत में पाण्डुलिपियों की परंपरा वैदिक युग से चली आ रही है। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद के मंत्र पहले मौखिक रूप में प्रसारित हुए, किंतु समय के साथ इन्हें लिखित रूप में संरक्षित किया गया। गुप्तकाल में पाण्डुलिपियों के लेखन को विशेष प्रोत्साहन मिला। इस काल में साहित्य, कला और धर्म के क्षेत्र में अद्भुत प्रगति हुई। नालंदा और तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालयों में हजारों पाण्डुलिपियाँ संग्रहित थीं। पुराण पाण्डुलिपियों का लेखन मुख्यतः संस्कृत भाषा में हुआ, किंतु समय के साथ वे क्षेत्रीय भाषाओं में भी अनूदित हुईं। इन पाण्डुलिपियों में केवल धार्मिक विषय ही नहीं, बल्कि इतिहास, खगोल, ज्योतिष, चिकित्सा, भूगोल, और नीति जैसे विविध विषयों का भी वर्णन मिलता है।

3. पुराण पाण्डुलिपियों की संरचना और विषय-वस्तु

पुराणों को परंपरागत रूप से अठारह मुख्य और अठारह उपपुराणों में विभाजित किया गया है। मुख्य पुराणों में ब्रह्म, पद्म, विष्णु, शिव, भागवत, नारद, मार्कण्डेय, अग्नि, भविष्य, ब्रह्मवैवर्त, लिंग, वराह, स्कंद, वामन, कूर्म, मत्स्य, गरुड़, और ब्रह्माण्ड पुराण प्रमुख हैं। इन सभी में सृष्टि की उत्पत्ति, ब्रह्मांड का स्वरूप, देवताओं की कथाएँ, ऋषि-मुनियों का जीवन, धर्म के सिद्धांत, कर्म, मोक्ष, और भक्ति के मार्ग का वर्णन किया गया है। प्रत्येक पुराण में एक विशिष्ट दृष्टिकोण है — जैसे भागवत पुराण भक्ति पर केंद्रित है, जबकि अग्नि पुराण में धर्मशास्त्र और नीतिशास्त्र पर विशेष बल है।

4. प्रमुख पुराण पाण्डुलिपियों के उदाहरण

१. **भागवत पुराण पाण्डुलिपि (१५वीं सदी)** — यह गुजरात और राजस्थान के ताड़पत्रों पर पाई गई, जिनमें श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं के सुंदर चित्र भी अंकित हैं।

२. **शिव पुराण की भोजपत्र पाण्डुलिपि** — कश्मीर से प्राप्त, जिसमें लिपि शारदा है और रंगीन अक्षरों से मंत्रों का लेखन हुआ है।

३. **ब्रह्मवैवर्त पुराण की बंगला लिपि पाण्डुलिपि** — बंगाल के मध्यकालीन मंदिरों से प्राप्त, जिसमें तांत्रिक और वैष्णव परंपरा का मिश्रण है।

5. आधुनिक संदर्भ में पुराण पाण्डुलिपियों की उपयोगिता

आधुनिक युग में जब तकनीक, विज्ञान और तर्क का वर्चस्व बढ़ रहा है, तब इन पाण्डुलिपियों की प्रासंगिकता इस बात में है कि ये हमारे सांस्कृतिक मूल्यों, नैतिकता और मानवीय संवेदनाओं को जीवित रखती हैं। डिजिटल युग में इन पाण्डुलिपियों का डिजिटलीकरण (Digital Preservation) किया जा रहा है, ताकि यह आने वाली पीढ़ियों तक सुरक्षित रहे। संस्कृत विश्वविद्यालय, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (IGNCA), और राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन जैसी संस्थाएँ इनकी सुरक्षा और अनुवाद के कार्य में लगी हुई हैं।

6. परंपरा और आधुनिकता का संगम

जहाँ परंपरा हमें हमारी जड़ों से जोड़े रखती है, वहीं आधुनिकता हमें नए आयामों की ओर अग्रसर करती है। पुराण पाण्डुलिपियाँ इस संगम का सुंदर उदाहरण हैं। आज इनका उपयोग केवल धार्मिक अनुष्ठानों में नहीं, बल्कि शोध, कला, वास्तुकला, डिजाइन, और प्रबंधन के सिद्धांतों में भी किया जा रहा है। उदाहरण के लिए, विष्णु पुराण में वर्णित 'सप्तद्वीप' की अवधारणा को आधुनिक भूगोल के संदर्भ में पुनर्परिभाषित किया गया है। इसी प्रकार भागवत पुराण की कथाओं पर आधुनिक नाट्य कला, नृत्य और सिनेमा में नए प्रयोग हो रहे हैं।

7. संरक्षण की चुनौतियाँ और समाधान

पुराण पाण्डुलिपियों के संरक्षण में कई चुनौतियाँ हैं — जलवायु परिवर्तन, कीट, नमी, और संसाधनों की कमी। कई दुर्लभ पाण्डुलिपियाँ क्षतिग्रस्त हो चुकी हैं या लुप्तप्राय हैं। इन समस्याओं के समाधान के लिए वैज्ञानिक विधियों का उपयोग आवश्यक है — जैसे माइक्रोफिल्मिंग, स्कैनिंग, और डिजिटल रिपॉजिटरी। इसके साथ ही इनका भाषाई अनुवाद और व्याख्या भी आवश्यक है ताकि सामान्य जन तक इसका संदेश पहुँच सके।

8. निष्कर्ष

पुराण पाण्डुलिपियाँ केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि भारतीय सभ्यता के सांस्कृतिक दस्तावेज हैं। ये हमारे अतीत, वर्तमान और भविष्य के बीच सेतु का कार्य करती हैं। इनकी प्रासंगिकता आज भी उतनी ही है जितनी प्राचीन काल में थी। परंपरा और आधुनिकता के इस संगम में, हमें इन पाण्डुलिपियों से प्रेरणा लेकर नए युग के लिए संतुलित और संवेदनशील समाज का निर्माण करना चाहिए।

पांडुलिपि और भूगोल: इतिहास, संस्कृति एवं स्थान का दर्पण

डॉ. शेफाली भागोतिया
असिस्टेंट प्रोफेसर
अपेक्स यूनिवर्सिटी, जयपुर

पाण्डुलिपि शोध शोधकार्य को सामान्य प्रणाली से पर्याप्त भिन्न प्रक्रिया है, जिसे यत्नसाध्य गहन प्रक्रिया के रूप में देखा जा सकता है कि पाण्डुलिपि शोध विविध समस्याओं एवं जटिलताओं के कारण उतना सहज नहीं है, जितना इसे समझा जाता है । पाण्डुलिपि शोध का प्रारम्भिक स्वरूप पाण्डुलिपि का सम्पादन है। पाण्डुलिपि सम्पादन का कार्य जब शोध के तौर पर किया जाता है तो शोधकर्ता के समक्ष प्रारम्भ से ही समस्यायें दृष्टिगोचर होती है, जो निम्न रूपों में हो सकती हैं।

पाण्डुलिपि सम्पादन के पथ में आने वाली समस्याओं को विविध रूपों में देखा जा सकता है। इस शोध पत्र के माध्यम से हम मुख्यत: ८ प्रकार की समस्याओं का अध्ययन करेंगे।

1. पाण्डुलिपि प्राप्ति से सम्बन्धित समस्या
2. पाण्डुलिपि की वास्तविकता सम्बन्धित समस्या
3. लिपिज्ञान से सम्बन्धित समस्या
4. लिपि सम्बन्धी समस्या
5. पाण्डुलिपि पठन सम्बन्धी समस्या
6. सम्पादन सम्बन्धित समस्या
7. पाठालोचन सम्बन्धित समस्या
8. कालज्ञान सम्बन्धी समस्या

(1) पाण्डुलिपि प्राप्ति की समस्या :

किसी भी शोध संस्थान से पाण्डुलिपि प्राप्त कर पाना सहज कार्य नहीं है। यदि आपको पाण्डुलिपि प्राप्त

करनी है तो सर्वप्रथम आप जिस संस्था / विश्वविद्यालय / शोध संस्थान से जुड़ कर शोधकार्य सम्पन्न करना चाहते हैं, वहाँ के अधिकारी का प्रमाणपत्र आपको प्राप्त करना होगा। पाण्डुलिपि ग्रन्थागार में उक्त प्रमाण पत्र के आधार पर आपको पाण्डुलिपि की फोटोप्रति उपलब्ध करायी जा सकती है। अनेक पाण्डुलिपि ग्रंथागार, शोधकर्ताओं को सदस्यता भी प्रदान करते हैं, अत: शोधकर्ता चाहे तो सदस्यता ग्रहण कर सकता है। इससे उस ग्रंथागार के साथ उसका स्थायी सम्बन्ध बन जाता है। भविष्य में अपनी अपेक्षा के अनुसार वह अन्य पाण्डुलिपि की भी फोटोप्रति उपलब्ध कर सकता है।

(2) पाण्डुलिपि की वास्तविकता :

जो पाण्डुलिपि आपने उपलब्ध की है वह फोटो प्रति मात्र है किन्तु मूल पाण्डुलिपि असली है अथवा नकली ? इसे जानना भी बहुत बड़ी समस्या है। इसके लिए कुछ मानक निर्धारित हैं। जिनके आधार पर पाण्डुलिपि का परीक्षण किया जाता है। यदि मूल पाण्डुलिपि उन मानकों पर खरी सिद्ध होती है तो उसे असली माना जाता है। नकली पाण्डुलिपि में आपको अपपाठ या भ्रष्टपाठ या प्रक्षेप अधिक मात्रा में मिल सकते हैं जो आपके सम्पादन कार्य को कठिन बना सकते हैं। अतः असली पाण्डुलिपि के आधार पर ही सम्पादन कार्य करना चाहिए। यह भी ध्यान रखें कि एक ही ग्रंथ की दो या दो से अधिक अलग अलग लिपिकारों की पाण्डुलिपियाँ आपके पास हो तभी आप पाठालोचन को सुगम बना सकेंगे।

(3) लिपिज्ञान की समस्या :

आप जिस लिपि को जानते हैं उसी लिपि में पाण्डुलिपि पढ़ सकते हैं। भाषा के लिए यह अनिवार्य नहीं होता कि वह किसी एक ही लिपि में लिखी जाये। अत: किसी भी लिपि में, किसी भी भाषा की पाण्डुलिपि उपलब्ध हो सकती है। आप जिस ग्रन्थ पर कार्य करना चाहते हैं, वह आपको किस लिपि में उपलब्ध हुआ है ? उस लिपि का ज्ञान आपको होना चाहिए। लिपि सीखने हेतु आपको जहाँ भी व्यवस्था उपलब्ध हो वहाँ लिपिज्ञान कर सकते हैं। लिपि प्रशिक्षण के वर्गों एवं शिविरों में भाग लेकर भी आप लिपियों के प्रारम्भिक स्वरूप एवं उनकी वर्णमाला को जान सकते हैं। इससे यह जान पायेंगे कि यह ग्रन्थ अमुक लिपि में लिखा हुआ है तथा जानकारी होने पर आप उसकी वर्णमाला से उसे पढने का प्रयत्न कर पायेंगे।

(4) लिपि समबन्धी समस्यायें :

पाण्डुलिपि पढ़ते समय लिपि सम्बन्धी भी कई समस्यायें हमारे सामने आती हैं। जैसे - लिपिभ्रम का होना

लिपिसाम्य के कारण किसी लिपि को समझ लेना आपके कार्य को बाधित कर सकता है। लिपिज्ञान होने पर भी पाण्डुलिपि पठन के समय वर्णसाम्य या शब्दसाम्य के कारण आप कहीं भी भ्रमित हो सकते हैं। अतः वर्णों एवं शब्दों की भिन्नता को सूक्ष्मता से पहचानना चाहिए।

लिपिज्ञान के अंग रूप में कुछ विशिष्ट संकेताक्षरों का भी ज्ञान कराया जाता है, जैसे 'v', '.', '-', '=', 'o' आदि। पाण्डुलिपियों में ये सभी संकेताक्षर एक विशिष्ट निर्देश करते हैं। इनके ज्ञान के अभाव में भी आप पाण्डुलिपि का सही सम्पादन नहीं कर सकते। कहीं पुनरावृत्ति, शब्दाभाव या वाक्याभाव भी हो सकता है। ये सब समस्यायें सम्पादन में आती ही हैं, अत: इस पर ध्यान दें तथा ऐसे स्थानों को चिह्नित कर लें। इन पर अनुभवी व्यक्तियों का परामर्श लिया जा सकता है।

(5) पाण्डुलिपि पठन सम्बन्धी समस्यायें :

पाण्डुलिपि के पठन में प्रथमतया बड़ी समस्या तब होती है, जब लिपिकार ने सभी शब्दों को एक ही पंक्ति में मिला कर लिख दिया हो। पंक्तिबद्धता की समस्या का निदान यही है कि आप शब्द के स्वरूप को पहचानें तथा शब्दों की भिन्नता को पहचानें। कहीं कहीं स्थानभेद से या लिपिकार की लेखन प्रक्रिया से भी लिपि में भिन्नता प्रतीत होने लगती है किन्तु आप इसे पहचानेंगे तो ही सही पाठ को समझ सकेंगे। पाण्डुलिपि के पाठक को शैली का ज्ञान भी अनिवार्य है क्योंकि शैली के आधार पर ही प्रक्षेपों को समझा जा सकता है। कहीं कहीं शैली में इतनी समानता होती है कि प्रक्षेपों को समझ पाना बड़ा कठिन हो जाता है, अतः शैली को समझने में भी आपकी सूक्ष्मदृष्टि होनी चाहिए।

(6) सम्पादन से सम्बन्धित समस्यायें :

पाण्डुलिपि के सम्पादन हेतु पृष्ठभूमि अथवा भूमिका में पाण्डुलिपि की उपलब्धि, स्थिति, स्वरूप एवं सम्पादन की आवश्यकता, महत्ता एवं उपयोगिता के बारे में तो आप लिखेंगे ही किन्तु ग्रन्थगार के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व को भी ज्ञात करके लिखना चाहिए। इस हेतु आपको बाह्य अथवा अन्तरंग प्रमाण जुटाने होंगे। सम्पादन में प्रामाणिक जानकारी जितनी उपलब्ध हो सके उसे देना चाहिए। यदि जनश्रुति से भी कुछ ज्ञात होता है तो किंवदन्ती के रूप में उसे दिया जा सकता है। ग्रन्थकार एवं ग्रन्थ के काल के ज्ञान की भी बड़ी समस्या होती है, अतः बाह्य एवं अंतरंग दोनों प्रकार के प्रमाणों के आधार पर ग्रन्थकार के स्थितिकाल का तथा ग्रन्थ के रचनाकाल का निर्णय किया जाना अपेक्षित है। इससे आपके शोध की यत्न-साध्यता प्रतीत होगी। इसके साथ ही ग्रंथ की विषयवस्तु का भी सारांश रूप में उपनिबन्धन किया जाना चाहिए।

(7) पाठालोचन सम्बन्धी समस्यायें :

मूल पाठ सर्वाधिक विशुद्ध रूप में प्रस्तुत कर सके इसके लिये पाठालोचन अपेक्षित होता है, किन्तु पाठालोचन के समय भी अनेक समस्यायें हमारे सामने आती हैं, जैसे – पाठभेद या पाठान्तर की समस्या। पाठभेद का तात्पर्य है शब्द में परिवर्तन या भिन्नता। जब आप दो या दो से अधिक एक ही ग्रंथ की पाण्डुलिपियों का पाठालोचन करते हैं तो उसमें कई स्थानों पर शब्दों के स्वरूप में अन्तर दिखायी देता है, कहीं पूरा शब्द ही अलग होता है, कहीं उस शब्द के स्थान पर दूसरा शब्द लिखा होता है। इसी प्रकार कही कहीं कोई वाक्य भी अधिक हो सकता है। इन सबका पृथक्र सारणीयन करना आवश्यक है। इनसे टिप्पणी या पादटिप्पणी बनाने में आपको सहजता रहेगी। यह भी ध्यान रखना चाहिए कि कहीं शब्द छूट गया हो अथवा वाक्य या पंक्ति ही छूट गयी हो। इनको भी विवरण में लिखना तथा टिप्पणी में दर्शाना अनिवार्य है।

(8) कालज्ञान सम्बन्धी समस्यायें :

पाण्डुलिपियों में काल का निर्देश संवत् के माध्यम से उपलब्ध होता है। यह संवत् कौनसा है यह भी समस्या सामने आती है। अत: पहले निर्धारित होना चाहिए कि शक संवत् है, विक्रमी संवत् या अन्य कोई संवत् है। तब ही आप शताब्दी उसके पूर्वार्द्ध, उत्तरार्द्ध का सही आकलन कर सकते हैं। इसी प्रकार संवत् के संख्यांकों के स्थान पर कई जगह शब्द लिख दिये जाते हैं। जैसे : वसुरामरामा: यहाँ 'वसु' शब्द का अर्थ '८' है, 'राम' का अर्थ '3' है तथा संख्यांक को विपरीत अर्थ से जाना जाता है अत: यहाँ इसका अर्थ होगा '338' | इस प्रकार आपके समक्ष कालज्ञापक वर्णबोधक शब्दों को जानने की भी समस्या हो सकती है। अनेक गन्थों एवं पाण्डुलिपि सम्बन्धी ग्रन्थों में इनका उल्लेख है, अतः आपको इनका भी ज्ञान करना अनिवार्य है, जिससे भूलवश गलत नहीं लिखा जावे।

निष्कर्ष :

उक्त समस्याओं का निराकरण करते हुए जब मूलपाठ का निर्धारण हो जावे तब भी एक बार व्याकरणिक दृष्टि से तथा दूसरी बार कोश के आधार पर शब्द स्वरूप की सम्यक्तता की दृष्टि से मूलपाठ का पुन: पर्यालोचन कर लेना चाहिए। इससे आपके मूलपाठ की विशुद्धता प्रामाणिक हो जायेगी। पाण्डुलिपि में यदि आपको विषयगत विशिष्ट पारिभाषिक शब्द इस वाक्य में उपलब्ध है, तो आप उन्हें परिशिष्ट में दे सकते हैं। इसी प्रकार यदि पद्यबद्धता हो तो पद्यों का अकारादि क्रम से अनुक्रम भी आप परिशिष्ट के रूप में ग्रन्थ के अन्त में जोड़ सकते हैं। इस प्रकार पाण्डुलिपि सम्पादन को शोधकार्य के रूप में निर्विघ्न सम्पादित किया जा सकता है।

"आधुनिक प्रबंधन सिद्धांतों में वैदिक विरासत और दर्शन का प्रासंगिकता एवं अनुप्रयोग"

डॉ. गरिमा मिश्रा
सहायक आचार्य
अपेक्स विश्वविद्यालय, जयपुर

प्रस्तावना

वर्तमान युग में प्रबंधन का क्षेत्र जितना व्यावसायिक और व्यावहारिक हो गया है, उतना ही उसमें सिद्धांतों की प्रासंगिकता बढ़ गई है। आश्चर्य नहीं कि प्राचीन भारतीय वैदिक दर्शन एवं परंपरा से ऐसे अनेक तत्व उभरते हैं, जिनका आधुनिक प्रबंधन में भी आधारभूत महत्व है। वैदिक परंपरा में वर्णित अनेक विचार, जैसे सम्पूर्णता, नैतिकता, नेतृत्व, योग्यता, धर्म, कर्म, सत्य, संयम आदि, आज के कॉर्पोरेट, प्रशासन, शिक्षण एवं अन्य संस्थागत व्यवस्थाओं में अपेक्षित हैं।

वैदिक दर्शन की प्रमुख अवधारणाएँ

ब्रह्म की अवधारणा: वैदिक दर्शन में ब्रह्म को सर्वोच्च सत्ता, परिवर्तनशीलता के पार, सृष्टि की ऊर्जा का स्रोत माना गया है।

कर्मवाद: प्रत्येक कर्म का अपना परिणाम है, जो व्यक्ति व संस्था के विकास या पतन का कारण बनता है।

धर्म: कार्य निष्पादन में नैतिकता, ईमानदारी, कर्तव्यभाव का महत्व।

ऋत, सत्य, अहिंसा: संगठनों में नियम, सत्यनिष्ठा व पारदर्शिता की आवश्यकता इसी अवधारणा से उपजती है।

संतुलन और योग्यता: कार्य, जीवन, परिवार, समाज, प्रकृति आदि के मध्य सामंजस्य– जो प्रबंध के हर स्तर पर अपेक्षित है।

आधुनिक प्रबंधन सिद्धांतों की संक्षिप्त रूपरेखा

वैज्ञानिक प्रबंधन (टेलर): कार्य की दक्षता, समय-प्रबंधन, श्रमिक–प्रबंधक सहयोग, औद्योगिक विज्ञान—पर केंद्रित।

मानवतावादी दृष्टिकोण: कर्मचारियों की संतुष्टि, नैतिकता, नेतृत्व एवं प्रेरणा का महत्व।

प्रणाली सिद्धांत: संस्था को 'एक पूर्ण इकाई' मानना, जिसमें सभी घटक तंत्र परस्पर जुड़े होते हैं।

वैदिक सिद्धांतों का आधुनिक प्रबंधन में अनुप्रयोग

1. नेतृत्व (Leadership)

वैदिक साहित्य में नेतृत्व गुण धर्म, समता, विवेक का मिश्रण है। आज के प्रबंधन में भी सफल लीडर वही है, जिसमें नैतिकता, स्पष्ट दृष्टि, विश्वास और संयम हो। श्रीकृष्ण (गीता) श्रेष्ठ प्रबंधक नेतृत्व के आदर्श उदाहरण हैं—दृष्टिकोण, कर्तव्यनिष्ठा, प्रेरणा, मार्गदर्शन।

2. नैतिकता और मूल्य

प्रबंधन की सफलता के लिए नैतिकता, पारदर्शिता तथा सामाजिक जिम्मेदारी का खास महत्त्व है—यह वस्तुतः वैदिक 'धर्म' और 'सत्य' के भाव का विस्तार है। कर्मचारी-जागरूकता, कर्तव्य, प्रमाणिकता, वैयक्तिक अनुशासन आज भी इन सिद्धांतों से अभिन्न हैं।

3. संगठनात्मक व्यवहार (Organizational Behavior)

संस्थान को जीवंत संस्था मानने और उसमें सभी स्तरों पर सामंजस्य, संवाद, समझौते व सहयोग की आवश्यकता—यह 'ऋत' और 'संगति सूक्त' आदि वैदिक सिद्धांतों से प्रेरित है।

4. समय प्रबंधन

'काल' की अवधारणा– वैदिक विचार में समय का महत्व अत्यधिक है; यह आज के 'टाइम मैनेजमेंट' एवं उत्पादन दक्षता का प्राचीन उदाहरण है।

5. कार्य के प्रति दृष्टिकोण

"कर्मण्येवाधिकारस्ते..." (श्रीमद्भगवद्गीता) जैसी वैदिक उक्ति कर्म के प्रति निःस्वार्थ, लगनशील, तटस्थ दिमाग से कार्य करने की आधुनिक प्रेरणा भी देती है।

आधुनिक संदर्भ में प्रासंगिकता

वर्तमान युग में प्रतिस्पर्धा के बढ़ते दबाव, वैश्वीकरण, सांस्कृतिक विविधता, उद्योगों की जटिलता आदि की चुनौतियों के बीच वैदिक सिद्धांत, जैसे समग्र दृष्टिकोण, संस्कार, सहयोग, संतुलन एवं नैतिकता—आज की आवश्यकता हैं।

COVID-19 के बाद एवं AI युग में प्रबंध की नैतिकता, लचीलापन, सृजनशीलता एवं त्वरित परिवर्तन में प्राचीन वैदिक शिक्षा अधिक प्रासंगिक है।

निष्कर्ष

वैदिक दर्शन के मूल तत्व—संघर्ष, सहभाव, तटस्थता, अनुशासन, सहयोग, संयम, साहस, सेवा-भाव, नेतृत्व, एवं नैतिकता—आधुनिक प्रबंधन के लिए अत्यंत उपयोगी हैं। यदि आज की संस्थाएँ इन मूल्यों को अपनाएँ, तो वह न केवल उत्पादकता व लाभ बढ़ा सकती हैं, बल्कि सामाजिक-मानवीय समरसता भी स्थापित कर सकती हैं।

1. संदर्भ सूची (20 References in Hindi)
2. आचार्य, हजारीप्रसाद द्विवेदी – भारतीय संस्कृति और साहित्य
3. कपूर, रामधारी सिंह दिनकर – संस्कृति के चार अध्याय
4. शर्मा, कुमार स्वामी – वैदिक साहित्य और प्रबंधन विज्ञान
5. श्रीमद्भगवद्गीता – गीता प्रेस गोरखपुर
6. उपनिषद सार – ईश, केन, कठ, मुण्डक उपनिषद
7. विश्वकर्मा, प्रो. माधव – भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक विज्ञान
8. त्रिपाठी, सत्येन्द्र – भारतीय दर्शन और कॉर्पोरेट नेतृत्व

9. झा, हेमचन्द्र – वैदिक सिद्धांत और संगठनात्मक विकास
10. चतुर्वेदी, डॉ. लक्ष्मण – समकालीन प्रबंधन में धर्म और नैतिकता
11. पं. श्रीराम शर्मा आचार्य – अथर्ववेद की दृष्टि में संगठन और समरसता
12. डॉ. बलराम शास्त्री – गीता और आधुनिक प्रबंधन
13. स्वामी विवेकानन्द – कर्मयोग और नेतृत्व
14. पं. गोविन्दाचार्य – ऋग्वेद दर्शन और जीवन प्रबंधन
15. मिश्रा, एस.एन. – भारतीय दर्शन: नीति, धर्म और व्यवहार
16. गुरुजी, श्री श्री रविशंकर – प्रबंधन में आत्म-ज्ञान और ध्यान
17. कपूर, राजेश – वैदिक दृष्टि और वैश्वीकरण का प्रबंधन
18. श्री अरविन्द – ह्यूमन साइकिल और प्रबंधन चिंतन
19. सेठ, पुष्पेंद्र – वैदिक कालीन शिक्षा और आधुनिक संगठनात्मक मूल्य
20. दयाल, जगदीश – भारतीय प्रबंधन शैली: परंपरा और प्रयोग

पांडुलिपि कला में नारी पात्रों का चित्रण और उनकी सांस्कृतिक भूमिका

डॉ. वंदना गजराज
सहायक आचार्य,
अपेक्स विश्वविद्यालय,जयपुर

भूमिका

भारतीय पांडुलिपि कला—जिसमें जैन, बौद्ध, राजस्थानी, पाली, मुगल तथा पहाड़ी शैली की चित्रकथाएं शामिल हैं—न केवल साहित्यिक परंपरा की वाहक हैं, बल्कि सामाजिक-सांस्कृतिक इतिहास की अमूल्य धरोहर भी हैं। इन पांडुलिपियों में नारी पात्रों का चित्रण सौंदर्य, शक्ति, भक्ति और दार्शनिक प्रतीकों के रूप में हुआ है। प्रस्तुत शोध-पत्र में पांडुलिपि कला में नारी के रूपांकन, उसकी सामाजिक-सांस्कृतिक भूमिका तथा कलात्मक तकनीकों का विश्लेषण किया गया है। भारत की प्राचीन और मध्यकालीन पांडुलिपि कला मात्र साहित्य के संरक्षण का साधन नहीं थी, बल्कि दृश्य कला की महत्वपूर्ण विधा भी थी। ताड़पत्र, भोजपत्र और हाथ से बने कागज़ पर रचे गये इन चित्रों में सामाजिक जीवन, धार्मिक विचार और सांस्कृतिक मान्यताएँ सजीव रूप में अंकित हैं। नारी का चित्रण इस कला का केंद्रीय तत्व रहा है, क्योंकि भारतीय समाज में नारी को सौंदर्य, सृजनशीलता, शक्ति और संस्कृति की वाहक माना गया है।

पांडुलिपि कला का ऐतिहासिक परिचय

1. पाली पांडुलिपि परंपरा (8–12वीं शताब्दी) बौद्ध ग्रंथों पर आधारित।
   देवी तारा, प्रज्ञापारमिता आदि स्त्री देवियों का उत्कृष्ट चित्रण।
2. जैन पांडुलिपियाँ (11–15वीं शताब्दी)
   कालकाचार्य कथा, कल्याणमंदिर स्तोत्र, कल्पसूत्र आदि में नारी पात्र नैतिकता और धर्मशिक्षा के प्रतीक।
3. राजस्थानी और पश्चिमी भारतीय पांडुलिपियाँ

राग-रागिनी, रामायण-महाभारत कथाएँ; नारी के भाव, वेशभूषा, परम्पराएँ जीवंत रूप में।

4. मुगल और पहाड़ी शैली (16–18वीं शताब्दी)

ऐतिहासिक व दरबारी स्त्रियाँ; संगीत, नृत्य, प्रेम और प्रकृति से जुड़ी स्त्री छवियाँ।

पांडुलिपि कला में नारी पात्रों का चित्रण

1. सौंदर्य एवं सौंदर्यानुभूति का प्रतीक

नारी को रूप-लावण्य, कोमलता और सांस्कृतिक मर्यादा के प्रतीक के रूप में दर्शाया गया।

- कोमल रंगों का उपयोग
- सुकोमल रेखांकन
- पारंपरिक आभूषण और परिधान

नारी की शारीरिक भाषा भावाभिव्यक्ति का माध्यम बनती है—लज्जा, करुणा, प्रेम, भक्ति, वीरता आदि।

2. देवी-स्वरूप नारी का चित्रण

भारतीय पांडुलिपियों में देवी की उपासना ने नारी को शक्ति और करुणा दोनों रूपों में स्थापित किया।

- प्रज्ञापारमिता – ज्ञान की देवी
- तारा – संरक्षण की देवी
- दुर्गा-काली – शक्ति और विजय का प्रतीक

इन चित्रों में नारी की दैवीय ऊर्जा और आध्यात्मिक महत्व उभरकर आता है।

3. धार्मिक एवं नैतिक आदर्श के रूप में नारी

विशेषकर जैन पांडुलिपियों में नारी पात्र—रूपमती, चंद्रप्रभा की माता, राजा-रानियाँ—धार्मिक नियमों, तप, त्याग और संयम की प्रतीक हैं।

उनकी छवियाँ समाज के नैतिक आदर्शों को संप्रेषित करती हैं।

4. नारी की भावनात्मक एवं मनोवैज्ञानिक उपस्थिति

मुगल और पहाड़ी शैली में स्त्रियों को उनके निजी क्षणों में चित्रित किया गया:

- श्रृंगार, नृत्य, वीणा-वादन
- प्रेम-संवाद
- विरह और प्रतीक्षा

यह चित्रण उनकी आंतरिक दुनिया और संवेदनशीलता को दर्शाता है।

5. सामाजिक जीवन में स्त्री की भूमिकाएँ

पांडुलिपियों में अनेक भूमिकाओं वाली स्त्रियाँ मिलती हैं: माता, रानी, साध्वी, योद्धा, कर्तव्यनिष्ठ पत्नी।

इन रूपों के माध्यम से उस समय के सामाजिक ढांचे में नारी की स्थिति और मूल्य दृष्टि समझ में आती है।

नारी पात्रों की सांस्कृतिक भूमिका :-

1. संस्कृति की वाहक और परंपरा की संरक्षक

नारी को लोक परंपराओं, कला, संगीत, गृह-व्यवस्था और नैतिक मूल्यों की संरक्षक के रूप में दिखाया गया—जिससे सामाजिक ताने-बाने की निरंतरता बनी रहती है।

2. आध्यात्मिकता और धार्मिक शिक्षाओं की माध्यम

पांडुलिपियों की कहानियों में नारी ईश्वर के प्रति भक्ति और सत्य के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरक शक्ति बनती है। माता-देवी-साध्वी के रूपों में नारी समाज को धर्म और नैतिकता की दिशा दिखाती है।

3. सामंतवादी समाज में स्त्री की स्थिति का प्रतिबिंब

चित्रों में स्त्री की भूमिकाएँ अक्सर समाज की सीमाओं को भी व्यक्त करती हैं—

- कभी वह पुरुष-केंद्रित संरचना में बंधी
- कभी स्वतंत्र और शक्तिशाली

इस प्रकार पांडुलिपि कला सामाजिक संरचना की आलोचना और समझ दोनों प्रस्तुत करती है।

4. सांस्कृतिक विविधता का प्रतीक

विभिन्न क्षेत्रों की पांडुलिपियों में स्त्री के वेश, आभूषण, रंग, भाव-क्षेत्रीय संस्कृति का सजीव परिचय देते हैं।

उदाहरण:

- राजस्थान की स्त्री चमकीले रंगों और भारी आभूषणों में
- बंगाल की स्त्री सरल परिधानों और प्राकृतिक परिवेश के साथ
- कश्मीर-पहाड़ी चित्रों में नारी प्रकृति में विलीन दिखाई देती है

कलात्मक तकनीकें जिनसे नारी का चित्रण प्रभावित हुआ

1. रेखांकन – कोमल, प्रवाहपूर्ण रेखाएँ, स्त्री की भावनाओं को व्यक्त करती हैं।
2. रंग योजना – लाल, पीला, नीला, हरा आदि पारंपरिक रंग, भावनाओं के अनुरूप।
3. सजावट एवं अलंकरण – आभूषण, वस्त्र-विन्यास और पृष्ठभूमि स्त्री की सामाजिक स्थिति का संकेत।
4. दृश्य-संयोजन – स्त्री को अक्सर केंद्र में रखा जाता है, जो उसकी सांस्कृतिक महत्ता को दर्शाता है।

भारत को विश्व गुरु बनाने में नारी पात्रों और पांडुलिपि कला की अहम भूमिका

विश्वगुरु बनने के लिए प्राचीन काल के आधार पर वर्तमान में किए जाने वाले प्रयास

प्राचीन भारत का सांस्कृतिक, धार्मिक और दार्शनिक ज्ञान विश्व को प्रेरणा देने वाला रहा है। पांडुलिपियों में निहित नारी पात्रों के माध्यम से न केवल कला और संस्कृति बल्कि सामाजिक-सांस्कृतिक आदर्श भी प्रकट होते हैं। आज जब भारत विश्वगुरु बनने का संकल्प ले चुका है, तब प्राचीन काल की इस अमूल्य विरासत से सीख लेकर निम्नलिखित प्रयास आवश्यक हैं:

1. सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण और प्रचार

डिजिटलाइजेशन: पांडुलिपियों और नारी पात्रों के चित्रण का डिजिटल रूपांतरण ताकि विश्वभर के लोग इन्हें देख और अध्ययन कर सकें।

संग्रहालयों और प्रदर्शनी: पांडुलिपि कला और नारी पात्रों पर केंद्रित विशेष संग्रहालय एवं प्रदर्शनी का

आयोजन।

अंतरराष्ट्रीय मंचों पर प्रस्तुति: भारतीय सांस्कृतिक धरोहर को विश्व के प्रमुख मंचों पर प्रदर्शित करना।

2 शिक्षा और शोध में विस्तार

- शैक्षिक पाठ्यक्रमों में समावेश: विद्यालयों और विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में पांडुलिपि कला और नारी पात्रों का समावेश।
- अंतरराष्ट्रीय सहयोग: विश्व के अन्य विश्वविद्यालयों व शोध संस्थानों के साथ सांस्कृतिक और शैक्षिक सहयोग बढ़ाना।
- अनुवाद और प्रकाशन: प्राचीन पांडुलिपियों के महत्वपूर्ण ग्रंथों का आधुनिक भाषाओं में अनुवाद और प्रकाशन।

3 सामाजिक और सांस्कृतिक जागरूकता

- सामाजिक मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म: नारी पात्रों की सांस्कृतिक भूमिका को जागरूक करने के लिए सोशल मीडिया अभियानों का संचालन।
- सांस्कृतिक कार्यक्रम: लोक कला, नाटक, नृत्य और संगीत के माध्यम से नारी पात्रों की महत्ता का प्रसार।
- सामाजिक सुधार: प्राचीन आदर्शों के अनुरूप नारी सम्मान, सशक्तिकरण और समानता को बढ़ावा देना।

4 नवाचार और समकालीन संदर्भ में पुनः व्याख्या

- आधुनिक कला में पुनरुत्थान: नारी पात्रों के चित्रण को समकालीन कला एवं मीडिया में प्रस्तुत करना।
- फिल्म, डॉक्यूमेंट्री और साहित्य: पांडुलिपि नारी पात्रों की कहानियों को वर्तमान संदर्भ में जीवंत करना।
- सांस्कृतिक पर्यटन: पांडुलिपि कला से जुड़े स्थलों का पर्यटन विकास, जिससे आर्थिक व सांस्कृतिक उन्नति हो।

निष्कर्ष :

प्राचीन पांडुलिपि कला में निहित नारी पात्रों के चित्रण और उनकी सांस्कृतिक भूमिका ने भारत को एक

विशिष्ट पहचान दी है। पांडुलिपि कला में नारी पात्र केवल सौंदर्य का विषय नहीं थे, बल्कि समाज की सांस्कृतिक, धार्मिक और दार्शनिक धारणाओं के महत्वपूर्ण वाहक थे।इन चित्रों में नारी—कभी देवी, कभी साध्वी, कभी प्रेमिका, कभी योद्धा—के रूप में एक बहुआयामी व्यक्तित्व रखती है।

पांडुलिपि कला के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय समाज में नारी को सदैव महत्वपूर्ण सांस्कृतिक आधारशिला माना गया। यह कला हमें न केवल सौंदर्यबोध प्रदान करती है बल्कि समाज की गहरी मनोवैज्ञानिक और सांस्कृतिक परतों को भी उजागर करती है। वर्तमान समय में यदि हम प्राचीन ज्ञान और सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षण करते हुए उपर्युक्त प्रयास करें, तो न केवल हमारी सांस्कृतिक विरासत संजोई जा सकेगी, बल्कि भारत विश्व गुरु के रूप में अपनी भूमिका को मजबूती से निभा सकेगा। पांडुलिपि कला में नारी पात्रों का चित्रण न केवल एक कलात्मक अभिव्यक्ति है, बल्कि वह उस काल की सांस्कृतिक, धार्मिक और सामाजिक मान्यताओं का दर्पण भी है। नारी की विविध भूमिका और उसकी सांस्कृतिक महत्ता को समझना और संरक्षित करना आवश्यक है ताकि हम अपनी सांस्कृतिक विरासत को बेहतर ढंग से समझ सकें।

संदर्भ सूची (References)

1. भारतीय लघुचित्र परंपरा – ए. के. कुम्भोज
2. Indian Miniature Painting – Basil Gray
3. Jain Manuscripts and Painting – Kalpana Desai
4. The Arts of India – Ananda K. Coomaraswamy
5. मध्यकालीन भारतीय पांडुलिपि कला – विभिन्न शोध आलेख

राष्ट्रोपनिषत्

रचयिता
स्व. आचार्य डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर विद्यालङ्कारः
(महामहिम-राष्ट्रपति-सम्मानित)

हिन्दी-रूपान्तरण-कर्त्री
सौ. श्रीमती इन्दु शर्मा
एम.ए., शिक्षाचार्या

अंग्रेजी-रूपान्तरण-कर्त्ता
महामण्डलेश्वरः स्वामी श्री ज्ञानेश्वरपुरी
विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थानम्, जयपुरम्

नेतृ-सैनिकयोर्मध्ये, वरीयान् सैनिकः सदा ।
राष्ट्रं सुरक्षति नित्यं, प्राणान् दत्वाऽपि सैनिकः ॥२६८॥

नेता और सैनिक के बीच सैनिक ही सदा महान् होता है। सैनिक प्राण देकर भी राष्ट्र की नित्य सुरक्षा किया करता है।

Between a politician and a soldier, a soldier is always greater. A soldier will always protect his nation even at the cost of life.

नैव सीमा विचाराणां, सन्तोऽसन्तश्च ते किल ।
विचारेव विश्वस्य, सृष्टिः स्थितिश्च संहृतिः ॥२६९॥

विचारों की सीमा नहीं होती। वे निश्चितरूप से सत् औऱ असत् अर्थात् अच्छे और बुरे दो तरह के होते हैं। विचारों से ही विश्व की सृष्टि, पालन और संहार होता है।

Thoughts have no limits. They can be either true or untrue, good or bad. With thoughts the world is created, protected and destroyed.

नौमि तान् शिक्षकान् नित्यं, ज्ञान-विज्ञान-सागरान् ।
सर्वज्ञानं प्रदायापि, रिक्ता ये न कदाचन ॥२७०॥

मैं ज्ञान-विज्ञान के सागर उन शिक्षकों को नित्य नमन करता हूँ जो अपना समस्त ज्ञान शिष्यवर्ग को प्रदान करके भी कभी रिक्त नहीं होते हैं।

In this ocean of knowledge, I always express my respect to those teachers, who even after giving their whole knowledge are not empty (of it).

पक्षपातो न कर्तव्यः, सर्वकारेण कुत्रचित् ।

सर्वस्यापि हिते तेन, कर्म कार्यं सदा शुभम् ॥२७१॥

सरकार को कहीं भी पक्षपात नहीं करना चाहिये । उसको तो सभी के हित में सदा ही शुभ कर्म करने चाहिये ।

The government should never be biassed. It should always do the good work which is in the interest of all.

पक्षेण च विपक्षेण, मान्यो यो निर्णयो नहि ।

कथं शुद्धः प्रशस्यः स, सन्देहाच्च परे पुनः ?॥२७२॥

जो निर्णय पक्ष और विपक्ष को माननीय न हो वह कैसे शुद्ध प्रशंसनीय और सन्देह से परे है ?

How will the one who neither accepts the decision/judgement nor its criticism rise above praise and doubt?

पत्युरेव हिते पत्नी, किं कृच्छ्रं व्रतमाचरेत् ? ।

पत्न्या हिते पतिः किं न, तथैवाचरति व्रतम् ? ॥२७३॥

पति के ही हित में पत्नी क्यों कठोर व्रत करे, पत्नी के हित में पति वैसे कठोर व्रत का आचरण क्यों नहीं करता है ?

Why should the wife do a difficult fast for her husband? Why doesn't the husband do the same difficult fast for his wife?

पत्रं दर्पण–तुल्यं हि, लेखकात्म–प्रकाशकम् ।

एतस्यानेक – रीत्याऽस्ति, सर्वत्रैवोपयोगिता ॥२७४॥

पत्र दर्पण के तुल्य होता है जो लेखक की आत्मा को प्रकाशित कर देता है । इसकी अनेक रीति से उपयोगिता रहती है ।

Paper is like a mirror that allows the writer to show his inner self. It is useful in many practices.

विविध साहित्यिक गतिविधियाँ

ISSN : 2582-6360

प्रकाशक : विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान – कीर्ति नगर, श्याम नगर, सोढाला, जयपुर

Website : vgda.in **Youtube :** www.youtube.com/c/vishwagurudeepashram **E-mail :** jaipur@yogaindailylife.org